OM - 12 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/08/2021 11:31 AM Page 7

कर्म • » परमात्मा हमारे कर्म नहीं करेंगे वो हमें कर्म करने की शक्ति देंगे

जानिए कर्म की शक्ति

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हम सोचते हैं कि जो भी होता है, भगवान की मर्जी से होता है। ठीक भी है। कौन करेगा, वे ही तो करेंगे। इसलिए हम रोज उनसे कहते हैं, हे भगवान मेरी समस्या ठीक कर दो। क्या भगवान हमारी समस्या ठीक कर सकते हैं? माल लो हमारे जीवन की समस्या है कि मुझे यह टेबल उठानी है। तो क्या मैं परमात्मा से कहूँ कि हे परमात्मा, टेबल उठा दो। उठेगी टेबल? नहीं। हम तो रोज उसे यही सब कहते हैं, तबीयत ठीक कर दो, बच्चे को पास करा दो, बच्ची की शादी करा दो, मेरा ट्रांसफर रुकवा दो। हमें यह पता है कि भगवान से हमें क्या मिल सकता है और क्या नहीं।

परमात्मा हमारे कर्म नहीं करेंगे। वे हमें सही कर्म करने की शक्ति देंगे, ज्ञान देंगे। जैसे एक बच्चे को होमवर्क करना है तो मम्मी-पापा उसका होमवर्क नहीं कर सकते। तो जब भी हम परमात्मा को याद करें या पूजा करें तो ये नहीं कहें कि मेरा यह काम करा दो, बल्कि कहें कि मुझे यह काम करने की शक्ति दें। अभी हम रोज उनसे कहते हैं कि मेरा ये काम कर दो। पंद्रह-बीस दिन हो गए, टेबल ही नहीं उठी। फिर कोई आकर मुझे कहता, आप इनसे नहीं, इनसे मांगो। तो हम इनको याद करना बंद कर देते हैं, किसी और की पूजा करना शुरु कर देते हैं।

अगर भगवान में हमारा विश्वास है, अपने माता-पिता में विश्वास हो तो हम परेशान नहीं होंगे। जैसा कर्म होता है, वैसा ही फल मिलता है। अगर ये स्पष्ट हो गया तो कभी भी हमारी ऊंगली न ऊपर की ओर जाएगी और न किसी और की ओर। अगर मैं अच्छा व्यवहार कर रही हूँ और फिर भी मेरे साथ गलत कर रहा है, तो उसका कारण कौन है? अगर कोई मुझे धोखा दे रहा है, तो कारण कौन? मेरी सेहत ऊपर नीचे हो रही है तो इसका कारण कौन है? इससे भी महत्वपूर्ण है कि इसका निवारण कौन करेगा। हमें जीवन में इस लाइन को पकड़कर रखना है, जैसा कर्म वैसा फल।

जैसा कर्म होता है, वैस ही फल मिलता है। अगर ये स्पष्ट हो गया तो कभी भी हमारी ऊंगली न ऊपर की ओर जाएगी और न किसी और की ओर।

जो कुछ हम सोचते हैं, बोलते हैं, करते हैं, वो है हमारा कर्म। जो हमारे साथ होता है, जीवन में जो परिस्थितियां आती हैं, लोग हमारे साथ जो व्यवहार करते हैं, वो है हमारा भाग्य। मैं इनसे कैसे बात करूँ ये है हमारा कर्म। ये हमसे कैसे बात करें, वो है मेरा भाग्य। दोनों के बीच में क्या संबंध है? जैसा कर्म होता है, वैसा भाग्य बनता है। हम जो कर्म करते हैं वो हमें दिखाई नहीं देता है, लेकिन भाग्य दिखाई देता है। जो हमारे साथ हो रहा है वह दिखाई देता है।

उदाहरण के लिए मेरे सामने घड़ी है। मैंने ये घड़ी उठाकर आपकी तरफ फेंकी। ये है मेरा कर्म। अब जो मैंने दिया, वापस भी वही आने वाला है। लेकिन मुझे सिर्फ यह दिखाई देता है कि वहाँ से घड़ी आ रही है। हम चाहते हैं फूल, लेकिन आ रही है घड़ी। इसी तरह अगर कोई सबके सामने मुझे बहुत कुछ बुरा कह दे। मैं कहती हूँ इन्होंने मेरी बेइज्जती कर दी। मैं बिना उन्हें समझे नाराज हो जाती हूँ। या फिर मान लें कि मेरे हाथ में एक काले रंग की गेंद है। मैंने सामने दीवार पर फेंकी, जो वापिस आ रही है। तो वैसे ही कोई मेरे पास काले रंग की बॉल भेज रहा है, यानी मेरी बेइज्जती कर रहा है। वो काले रंग की गेंद सामने से आ रही है, वो घड़ी सामने से आ रही है, वो बेइज्जती सामने से आ रही है, वो धोखा सामने से आ रहा है, तो हम क्या करें! हम उनसे कह सकते हैं कृपया ऐसा न करें। हमारे कहने से वे रुक सकते हैं, लेकिन हम नाराज हो जायेंगे। वहाँ से काली गेंद आ रही थी, हमने भी वापस काली गेंद फेंक दी। इस तरह से ये युग कलियुग बन गया।

अब हमें सतयुग बनाना है। काली गेंद आ रही थी, हमने भी काली भेजी, कलियुग बन गया। इस क्षण मेरे पास विकल्प है कि मैं उनको समझकर, उनकी कमज़ोरी और दर्द जानकर, वो जैसे हैं, उनको वैसे स्वीकार करूँ। इससे मेरा मन शांत हो जाएगा। मेरे मन में यह सवाल नहीं उठेगा कि मेरे साथ ही बार-बार ऐसा क्यों करते हैं। वो ऐसा व्यवहार करेंगे, तो क्या हम उनसे प्यार से बात कर सकते हैं? अगर हम उनसे प्यार से बात करेंगे तो फायदा किस-किस का होगा? पहले तो मेरा अपना मन ठीक रहेगा, दूसरी मेरी सेहत ठीक रहेगी, उस ऊर्जा का प्रभाव हमारे मन पर नहीं पड़ेगा, चौथा उनकी भी सेहत ठीक रहेगी। सबका लाभ होगा। इसी से तो सतयुग आएगा।

एक नई सोच

{ आत्मविश्वास }

परनिंदा या आलोचना न करें, दूसरों के दोष निकालने की आवश्यकता नहीं है, ये आदतें उन्नति में बाधक सिद्ध होती हैं, ईर्ष्या मनुष्य को उसी तरह से खाती है जैसे कीड़ा कपड़े को धीरे-धीरे कुतरता है, दूसरे के सुख में सुख का अनुभव करें, दुःख में सहानुभूति दें।

प्रेम जीवन की समस्त कठिनाईयों तथा समस्याओं को आत्मसात कर लेता है, सदैव स्वस्थ रहने के लिए तथा सही मायनों में खुश रहने के लिए, प्रेम करें, हमेशा आत्मविश्वासी रहें, आत्मविश्वास जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक है, हमेशा आत्मविश्वास ही काम आता है। दूसरों के हित में अपना हित देखें, किसी के दुःख में काम आने के लिए अपने सुख का त्याग कर दें यही सच्ची सेवा है। दूसरों की सेवा करें, तभी परमपिता परमात्मा जो हम सभी आत्माओं के पिता हैं वो हमसे खुश होंगे।

अम्बातलावडी-सूरत(गुज.)। स्वतंत्रता दिवस की शुभ संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में शहर की प्रथम नागरिक मेयर श्रीमति हेमालि बहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सोनल बहन। कार्यक्रम में एम.एल.ए. कांतिभाई, ब्र.कु. मयूरी बहन, ब्र.कु. गायत्री बहन तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

मथुरा-रिफाइनरी नगर। मथुरा जेल अधीक्षक ब्रजेश कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन।

व्यारा-गुज.। नगरपालिका प्रमुख सेजल बहन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दीपा बहन।

मुन्द्रा-कच्छ(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मुन्द्रा एक्ज़िम वियरहाउस में आयोजित 'नशा मुक्ति' कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विजय तथा ब्र.कु. आमोद।

बीदर-कर्नाटक। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् रामचन्द्रन आर.,आई.ए.एस.,डिप्टी कमिश्नर,बीदर तथा डॉ. रूद्रेश एस. घाली,एडिशनल डिप्टी कमिश्नर,बीदर को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला बहन तथा राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा बहन।